

HISTORY

B.A.PART- I (Hons.)

Paper-I (History of India Upto1206)

UNIT-I (Vedic Texts Sources of Ancient Indian History)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 05

(इस PDF का Audio or videos देखने के लिए नीचे लिखे लिंक को follow करें 📌📌📌)

<https://youtu.be/ZfA3UPC1wgM>

<https://youtu.be/ah0FbdqMYfA>

प्राचीन भारतीय इतिहास के स्रोत (भाग- 1)

✓ वैदिक स्रोत.....

* ब्राह्मण धर्म ग्रंथों में वेदों का सर्वश्रेष्ठ स्थान है।

* कुछ लोग वेदों को अपौरुषेय अर्थात् देवकृत मानते हैं।

* वेद चार हैं - ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद।

@ ऋग्वेद:-

* ऋग्वेद ऋचा में बद्ध है।

* ऋग्वेद में कुल 10 मंडल हैं।

* ऋग्वेद में कुल 10 28 (1017+वालखिल्य सुक्त - 11) सूक्त हैं।

* इन सुक्तों के रचियता हैं - गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज और वशिष्ठ आदि प्रमुख हैं।

* स्त्रियों में - लोपामुद्रा, घोषा, शची, पौलोमी और

कांक्षावृत्ति रचयिता हैं।

- * वेदों के श्लोकों को ऋचार्ये कहा जाता है।
- * इन ऋचाओं की संख्या 10462 है।
- * आठवें मंडल में मिली हस्तलिखित प्रतियां के परिशिष्ट को 'खिल' कहा गया है।
- * पहले मंडल के प्रथम 50 सुक्त तथा समूचा आठवां मंडल कण्व वंश के ऋषियों का है।
- * दूसरे से सातवां तक प्रत्येक मंडल एक एक ऋषि वंश का है। जैसे-गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, आत्रेय, बार्हस्पत्य और वशिष्ठ।
- * यह उन वंशों का नाम है।
- * दूसरा और सातवां मंडल की ऋचाएं सर्वाधिक प्राचीन है।
- * ऋग्वेद के 9 वें मंडल में देवता सोम का वर्णन है।

* पहला तथा दसवां मंडल अंत में जोड़ा गया।

* 10 वें तथा पहले का शेषांश (51-191) विविध ऋषियों के तथा विविध विषयक है।

* समाज के चतुष्प वर्ण समाज के कल्पना का आदि श्रोत ऋग्वेद के दसवें मंडल में वर्णित पुरुष सूक्त है।

* ऋग्वेद में इंद्र के लिए 250 तथा अग्नि के लिए 200 श्लोकों का वर्णन है।

* वामन अवतार के 3 पदों के आख्यान का प्राचीनतम स्रोत ऋग्वेद है।

* वेद को ही संहिता कहा गया है और उस युग को संहिता युग कहा गया।

* भारत का सर्वाधिक प्राचीन ग्रंथ वेद है। जिनका अंतिम प्रमाणिक संकलन महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेद व्यास ने किया।

वेद का अर्थ- ज्ञान।

वेदव्यास का अर्थ- ज्ञान का संपादक हैं।

* उन्होंने वेदों की पांच संहिताएं कर दी।

ऋक, यजुष तथा सामवेद की तीन धाराएं मिलाकर "त्रयी" कहलाये।

'अथर्व वेद तथा इतिहास वेद' मिलाकर कुल पांच वेद हुए।

वैदिक ग्रंथों के शाखाएं एवं ब्राह्मण ग्रंथ:-

@ ऋग्वेद की कुल 5 शाखाएं हैं:-

शाकाल, वाष्कल, आश्वलायन, शांखायन, मांडुकेय।

* वर्तमान में ऋग्वेद की पहली शाखा ही उपलब्ध है

@ यजुर्वेद

यजुर्वेद में यज्ञ विधियों का प्रतिपादन किया गया है।

"यजुष" का अर्थ है यज्ञ।

* यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण "अध्वर्यु" नामक पुरोहित करता है।

* यजुर्वेद का कार्यक्षेत्र कुरूपंचाल है।

* यजुर्वेद के दो भेद हैं:-

(१) कृष्ण यजुर्वेद (२) शुक्ल यजुर्वेद।

* कृष्ण यजुर्वेद में मंत्रों का संग्रह है।

* शुक्ल यजुर्वेद में छंदोबद्ध मंत्रों के साथ गद्यात्मक भाग भी हैं।

* महर्षि पतंजलि द्वारा उल्लेखित यजुर्वेद के 101 शाखाओं में मात्र 5 ही शेष बचे हैं।

@ यजुर्वेद 5 शाखाओं में विभक्त है।

* प्रथम चार शाखाएं कृष्ण यजुर्वेद में समाहित है।

* कृष्ण यजुर्वेद:- काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी, तैतरीय।

* शुक्ल यजुर्वेद:- वाजसनेयी।

* शुक्ल यजुर्वेद विशेष प्रसिद्ध है इसका संबंध याज्ञिक अनुष्ठान से है।

* शुक्ल यजुर्वेद का अंतिम अध्याय इशोपनिषद् है, जिसका विषय दार्शनिक और आध्यात्मिक है।

@ सामवेद

सामवेद में संकलित मंत्रों को देवताओं की स्तुति के समय गाया जाता था।

* सामवेद गान प्रधान है।

प्राचीनकाल में जो ऋषि सामवेद गाते थे उन्हें "उद्गाता" कहा जाता था।

* सामवेद में कुल 1549 ऋचाएं (मंत्र) हैं। जिनमें 75 नए हैं और शेष ऋग्वेद से लिया गया है।

@ सामवेद की 3 शाखाएं हैं :-

कौथमीय, जैमिनीय, राणायनीय।

* कौथमीय का केवल सातवां प्रपाठक मिलता है।

@ अथर्ववेद

* यह वेद अथर्वा ऋषि द्वारा रचित है।

* इस वेद में कुल 40 अध्याय और 711 सूक्त हैं।

* अथर्ववेद में मंत्रों की संख्या 6000 है।

इसवेद का महत्वपूर्ण विषय है ब्रह्म ज्ञान औषधि-प्रयोग रोग निवारण तंत्र मंत्र टोना टोटका जादू विविध वर्ण्य विषय है।

@ अथर्ववेद की दो शाखाएं हैं:-

पिप्पलाद और शौनक।

@ ब्राह्मण धर्म ग्रंथ....

वेदों अथवा संहिताओं और वैदिक शाखाओं के बाद ब्राह्मण ग्रंथ आता है।

* यज्ञों के विषयों का अच्छी तरह प्रतिपादन करने वाले ग्रंथ को ही ब्राह्मण ग्रंथ कहते हैं।

* ब्राह्मण ग्रंथों की रचना गद्य और पद्य दोनों में हुई है।

* प्रत्येक वेद के अपने-अपने ब्राह्मण ग्रंथ होते हैं।

* ऋग्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ दो हैं।

(१) ऐतरेय ब्राह्मण

(२) कौषीतिकी या सांख्यायन ब्राह्मण।

* ऐतरेय ब्राह्मण की रचना महि दास ने की है।

* इस ब्राह्मण ग्रंथ में 8 मंडल हैं और प्रत्येक मंडल के 5 अध्याय हैं जिन्हें "अष्ट पंचिका" कहते हैं।

@ यजुर्वेद के ब्राह्मण ग्रंथ :-

(१) शतपथ ब्राह्मण

(२) वाजसनेय ब्राह्मण।

@ शतपथ ब्राह्मण के दो पाठ हैं:-

(१) माध्यान्दिन (२) कण्व।

@ सामवेद के ब्राह्मण ग्रंथ :-

(१) पंचविश या ताण्डय ब्राह्मण

(२) षडविंश

(३) जमैनीय (तल्वाकार) ब्राह्मण

(४) छान्दोग्य ब्राह्मण

इनमें से पंचविश या ताण्डेय ब्राह्मण सबसे महत्वपूर्ण है।

@ अथर्ववेद का ब्राह्मण ग्रंथ:-

गोपथ ब्राह्मण।

आगे भी यह जारी है.....